झारखण्ड राज्य में सदानों की समाजिक, आर्थिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
(राँची नगर के संदर्भ में)

डॉ0 गंगा केवट*

भूमिका :–

झारखण्ड के इतिहास का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि मुण्डाओं के आगमन के पूर्व भी झारखण्ड क्षेत्र में गैर आदिवासियाँ रहते थे। बौद्ध धर्म, जैन परम्पराओं से संबंध बहुत सारे लोग इस क्षेत्र में निवास करते थे।

सदानों की प्राचीनता के अनेक प्रमाण 1912 ई0 तक मिला था। लिस्ट ऑफ मोनुमेन्ट्स इन दि छोटानागपुर डिविजन पुस्तक में चौथी शताब्दी ई0 पू0 से 1872 तक सैकड़ों पुरातात्विक अवशोषों का विवरण है जिससे साबित होता है कि यहाँ गैर आदिवासी समुदायों का व्यापक अस्तित्व था।

पुरातात्विक अवशेषों से भी इस बात श्री पुष्टि होती है कि झारखण्ड के सदानों की परंपरा बहुत पुरानी है। आदिवासियों में मूर्तिपूजा का प्रचलन नहीं है। गढ़ और महल बनाने में भी उनका विश्वास नहीं है। तब सोचने की बात है कि झारखण्ड के विस्तृत इलाके में चौथी शताब्दी ई0 पूं0 से पुरातात्विक अवशेषों की लम्बी श्रृंखला कहां से आई। जाहिर है कि इनकी निर्माता–सदानों का पूर्वज था। सैकड़ों पुरातावित्क अवशोषों–बौद्ध, जैन, शैव, शक्त, वैशव आदि परंपराओं के साक्ष्य है। इससे स्पष्ट होता है कि सदान झारखण्ड के मूल निवासी है।

सदान कौन है?

सदानों की निम्नलिखित दृष्टि से स्पष्ट कर रहा हूँ। **व्युत्पति की दृष्टि** से सदान शब्द 'आन' प्रत्यय लगाकर बना है जैसे– सद+आन = सदान। 'सद' शब्द की व्युत्पति दो तरह से संभव है– एक संस्कृत–प्राकृत मूल से, दूसरा यहाँ के आग्नेय भाषा परिवार से।

भाषा की दृष्टि से नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनियाँ और कुरमानी आदि भाषा बोलनेवाली गैर जनजातियाँ ही सदान है। सदान कोई एक जाती या कबीला नहीं बल्कि एक समुदाय है।

धर्म की दृष्टि से हिन्दू ही प्राचीन सदान है। इस्लाम एवं जैन आदि धर्मावलम्बी भी सदान हैं। चूँकि इन सभी धर्मावलंबियों की मातृभाषा जैनी या उर्दू या अरबी फारसी न होकर खोरठ, नागपुरी, पंचपरगनियाँ, कुरमाली आदि है।

प्रजातीय दृष्टि से सदान आर्य हैं। कुछ द्रविड़वंशी भी सदान हैं। कुछ आग्नेय कुल के लोग भी सदान हैं। आग्नेय कुल के लोग सदान इसलिए हैं। क्योंकि उनकी भाषा सादरी है।

जाति दृष्टिकोण से सदान झारखण्ड क्षेत्र में राजपूत, ब्राहम्ण, कायस्थ, बड़ाईक, तेली, निषाद (मल्लाह) कुरमी, धानुक, राउतिया, गोड़ाईत, घासी, केवट, कहार, लोहड़िया, मुरयारी, भुईयाँ, प्रमाणित, तांती, स्वासी, कोस्टा, झोरा, रक्सेल, गोसाई, बरगाहा, मलार, सराय, खडैत, बिन्दु, कन्दू, नोनिया एवं मुस्लिम जातियाँ इत्यादि है।

सदानों का परिचय :–

रूप–रंग एवं वेश–भूषा – ''सदानों का रूपरंग एक जैसा नहीं है। वेलोग सांवले और गोरे विविध नाक–नक्शे वाले, लम्बे एवं ठिगने होते हैं। उनका पहनावा धोती, कुर्त्ता, गमछा, चादर है लेकिन वर्त्तमान में पैंट, शर्ट, पायजामा, सलवार साड़ी आदि पहनते हैं''[1]

खान–पान :– ''सदानों का मुख्य भोजन चावल है। चावल से भात, गोलहइत, खिचड़ी, छिलका, बर्रा, धुसका, पूछा, पीठा आदि बनाया जाता है। मडुआ, मकई आदि से रोटी, घट्ठा आदि बनाते हैं। ये लोग मांसाहारी होते हैं। ये लोग जंगली जानवर खरगोश, हिरण, कबूतर, तीतर, पंड़की, हारियल, आदि को भी मारकर खा जाते हैं[2]

* एम0ए0, पीएच0 डी0, समाजशास्त्र

आभूषण :– सदान महिलाएँ आदिवासियों की तरह ही आभूषण पोला, शंका, बिछिया, हार, प्रईरी, हंसली, कंगना, सिकरी, हार, पईरी, करन फूल नथिया, बुलाक बेसर, मंगटीका, पटवासी, इत्यादि पहनती है। ये लोग गोदना भी शरीर पर गढ़ती हैं''[3]

गाँव–घर :– ''सदानों के घर सामान्यतः आदिवासी घरों की तरह ही मिट्टी और खपड़ैल के बने होते हैं। लेकिन सम्पन्न सदानों के घर कोठा, ढावा, बंगला, आंगन और बारी सहित होते हैं। बाग बगीचा तलाब कुआँ, देवी मंड़ई शिवाला, मंदिर, मस्जिद, अखरा, आदि सदान गाँवों की खास पहचान है। कहीं–कहीं धर्मशाला भी उपलब्ध है। गाँव में छोर में श्मशान और कब्रगाह की प्रायः गाँव के इर्द–गिर्द फैले होते है''[4]

गृहस्थी के सामान :– ''गाँवों में अभी भी 60 प्रतिशत सदान आदिवासी की तरह मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करते हैं। घरों में हँड़िया, गगरी, चुका, डकनी जरूर दिखाई देते हैं। सामुहिक भोज में पत्तल, दोना का ही प्रचलन है। घरेलू प्रयोग में चटाई, मचिया, लेदरा, पीरहा, खटिया, चौकी, टंगना, माचा इत्यादि प्रमुख वस्तुएँ है। खेतीबारी के उपकरणों में आदिवासियों की तरह सदानों में भी है जैसे– कुदाल, खुरपी, हल, ठांगा, हंसुआ, सूप, झाड़ू, चलनी, बहिंगा, ढेंकी, दउरा, खाँची, गाड़ी, रूखना, बसुला, आरी, रंदा आदि है।''[5]

शिकार के औजार :– ''सदानो का औजार तीर, धनुष, भाला, तलवार, लाठाचोंगी, गुलेल एवं मछली कारने के लिए जाल, कुमनी, बंसी डांग धोधी आदि औजार है। जमींदार लोग बंदूक भी रखते है''[6]

शिक्षा दीक्षा :– ''सदानों में अपना परिवार ही परम्परागत शिक्षा का केन्द्र है। गाँव में अभी भी अपने खेती–बारी, व्यवसाय एवं मंत्र, गुण–बान, जड़ी–बूटी आदि की शिक्षा लेता है। लेकिन वर्त्तमान में नयी शिक्षा प्रणाली के कारण स्कूल–कॉलेजों में भी शिक्षा ग्रहण कर रहे है। अपना खेती–बारी को छोड़कर नौकरी भी कर रहे है''[7]

भाषा–लिपि :– ''सदानों की भाषा को आम तौर पर 'सदान' कहा जाता है। सादरी भाषा भी कहा जाता है। नागपुरी खोरठा, पंचपरगनियाँ एवं कुरमाली आदि सदान लोगों की भाषाएँ है''[8]

नातेदारी :– ''सदान समाज पितृसत्तत्मक होता है। ये लोग पिता के बड़े भाई को बड़का बाबूजी, पिता के छोटे भाई को काका (पितिया), पिता के पिता को दादा (आजा), पिता के माँ दादी (आजी), माँ के भाई को मामा, माँ के पिता को नाना कहते है। येलोग देवर–भौजी, साली–भाठु, दादा, दादी, नानी से मजाक करते है''[9]

नाच–गान :– सदान भी आदिवासियों की तरह नाच–गान करते हैं। ''डमकच, झुमरा, झूमर, उदासी, पावस एवं सोहराई सदानी गीतों के मुख्य भेद है लेकिन पुरूष एवं महिलाएँ अलग–अलग नाच–गान करते हैं।''[10]

खेल–कूद :– ''सदानों के खेलकूद आदिवासियों की तरह ही है। ''युवकों में मुर्गा लड़ाई, गुल्ली–डंडा, कबड्डी, लट्टू, गुड्डी, डोलपत्ता, लाठी–डंटा, ताशा, शतरंज, बाघ–बकरी, लुड्डो इत्यादि खेल हैं''[11]

पर्व–त्योहार :– ''सदानों का त्योहार होली, दीवाली, दशहरा, काली पूजा, जितिया, सोहराय, करमा, नवाखानी, मकर संक्रांति, टुसू, सरहुल, रथयात्रा, कृष्णाअष्टमी, तीज इत्यादि है''[12]

धर्म :– कुछ सदान वैष्णव परम्परा से प्रभावित हैं तो कुछ जैन, बौद्ध, इस्लाम इत्यादि से। सदानों में सराक नामक एक छोटे क्षेत्र में अवस्थित जाति जैन धर्म से प्रभावित है। वे सूर्यास्त के बाद भोजन नहीं करते हैं। ये लोग सूर्य एवं मनसा के उपासक हैं। कहीं–कहीं कबीरपंथी लोग भी दिखाई पड़ते हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में सदान ऐसे गैर आदिवासी समुदाय को कहा जाता है जो कम से कम दो तीन पीढ़ियों से झारखण्ड क्षेत्र में रह रहे हो या सदान झारखण्ड के मूल गैर जनजाति लोग हैं जिनकी मातृ भाषा सदानी है या रही है। यानि जिनकी भाषा पंचपरगनियाँ, कुरमाली, नागपुरी एवं खोरठा आदि हो और जिनकी एक विशिष्ट पहचान एवं संस्कृति बन गई है सदान कहलाता है।

सदानों की सामाजिक स्थिति :–

किसी भी समाज की समग्र की प्रस्तुत करने के लिए सामाजिक संरचसा को स्पष्ट करना अपेक्षित हो जाता है। सामाजिक संरचना समाज के बाह्य स्पष्ट का बोधक हैं।

उत्तर वैदिक काल में झारखण्ड के सदान समाज की सामाजिक संरचना आदिवासी समाज की सामाजिक संरचनाओं एवं अधिकांश रीति–रिवाजों में समानता था। ऐसे किसी भी समाज का सामजिक संरचना अतीत से शुरू हुआ था और जिस क्रम से उसका विकास होते चला आ रहा है। इसका प्रमाणिक विवरण इतिहास साक्ष्य है। इसी तरह झारखण्ड के सदानों की सामाजिक संरचना परंपरागत रही है। सदानों की प्राचीनता आदिवासियों के साथ देने का प्रमाण अनेक दस्तावेजों में दर्ज है।

डॉ0 विशेश्वर प्रसाद केशरी ने अपनी पुस्तक झारखण्ड के इतिहास की कुछ जरूरी बातें में लिखा है कि झारखण्ड के ''सदानों का प्रारंभिक इतिहास नाग जाति, नाग समुदाय से संपुक्त है। नाग जाति से जुड़े छोटानागपुर के नागवंशी लाल ठाकुर, पंचेत के गोवंशी शिखर और सुरगुजा के रक्सौल राजाओं के लगभग दो हजार वर्षो तक झारखण्ड में अविच्छिन राज्य किया। जमीनदारी उन्नमूल तक इनकी शासन सता झारखण्ड में कायम थी। इनके पूर्व बौद्ध तथा जैने परम्पराओं से संबंद्ध बहुत सारे लोग इस क्षेत्र में निवास करते थे। जगह–जगह इनके निवासों के प्रतीक प्रमाण झारखण्ड में मौजूद हैं। जैन परंपराओं के प्रतीक रूप में पारसनाथ आज भी जैनियों को प्रसिद्ध तीर्थ है। इस क्षेत्र की सराक जाति अभि तक अनेक जैन प्रथाओं का परिपालन करती है। इन तथ्यों को इस बात का प्रमाण माना जा सकता है कि झारखण्ड में सदानों का ऐतिहास ढाई हजार साल से कम पुराना नहीं है''[13]

''शिवजी के गले में सुशोभित नाग, पृथ्वी को धारण करने वाले शेष नाग, विष्णु की श्यया के रूप में क्षीर सागर में प्रतिष्ठित अनंत नाग आदि की मिथिक कथाएं महाभारत काल में पुंडरिक नाग के इतिवृत में अवतारित होती है, इसी पुंडरिक नाग के वंशधर थे, झारखण्ड के प्रथम नागवंशी राजा फणिमुकुट राय जिसे झारखण्ड के प्रसिद्ध परहा, राजा, मदरा– मुण्डा ने किवंदन्ती के अनुसार गोद लिया था और परहा, पंचों, मानकी मुण्डाओं की सहमति से अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था''[14]

डॉ0 वी0पी0 केशरी ने अपनी पुस्तक झारखण्ड के सदान में लिखा है कि ''सदान समाज विभिन्न जातियों में बंटा हुआ है। धन, मान, पेशा आदि की दृष्टि से इनमें श्रेणी बद्धता भी है। अतः प्रत्येक जाति की अपनी रीति–नीति, मर्यादाएँ और विशिष्टताएँ है। जिनका उल्लंघन वर्जित ही नहीं, दण्डनीय अपराध भी माना जाता है। जाति, पंचायत इसका नियंत्रण करती है। जो बातें गाँव की जाति पंचायत में हल नहीं हो पाती है उन्हें उस जाति की क्षेत्रीय पंचायतों में सुलझायी जाती है। जाति के चौधरी या प्रधान तथा पंचों के अतिरिक्त गुरू पुरोहित भी उन्हें अनुशाासित करते हैं। विवाह और श्रद्धा जैसे विशिष्ट सामाजिक अनुष्ठानों में गुरू पुरोहित, चौधरी प्रधान आदि से भी विशेष महिमा देखी जाती हैं। ग्राम स्तर के अनुष्ठानों में गाँव के मुण्डा, महतो, पाहन आदि का भी सम्मानजनक स्थान है''[15]

झारखण्ड के सदानों में संख्या के आधार पर परिवार को वर्गीकरण किया जा सकता है। संख्या के आधार पर तीन प्रकार के परिवार को बांटा गया है–

क) नाभिक परिवार (Nuclear Family) :-

नाभिक परिवार, परिवार का सबसे छोटा रूप है जो एक पुरूष, स्त्री तथा उनके आश्रित बच्चों से मिलकर बना होता है। इसमें बच्चे भी अविवाहित रहने तक ही रहते हैं।

ख) संयुक्त परिवर (Joint Family) :-

जब किसी परिवार भी तीन या तीन से अधिक पीढ़ियों के सदस्य साथ–साथ एक ही घर में निवास करते हैं उनकी सम्पत्ति सामूहिक होती है वे एक ही रसोई में बना भोजन करते हैं।

ग) विस्तृत परिवार :–

इस प्रकार के परिवार में सदस्यों की संख्या बहुत अधिक होती है। इसमें रक्त संबंधी नौकर एवं अन्य संबंधी भी होता है। झारखण्ड में इस प्रकार के परिवार नागवंशी राजा महाराज, जमीन्दारों, ठीकेदारों एवं बड़े किसानों में मिलता है।

अतः निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि वर्तमान काल में झारखण्ड राज्य में नाभिकीय या केन्द्रीय परिवार और संयुक्त परिवार सदान समाज में देखने को मिलता है।

नातेदारी (Kindship) :-

नातेदारी तीन प्रकार के होते है –

1. रक्त संबंधी नातेदारी (Consanguineous Kindship) :-

यह नातेदारी रक्त के आधार पर आधारित होती है। जैसे माता–पिता और इनके बच्चों के बीच दो भाईयों के बीच, दो भाई बहिनों के बीच।

2. द्वितीयक नातेदारी (Second Kindship) :- जब प्राथमिक नातेदारी के संबंधी के द्वारा होता है जैसे– भजिता का चाचा से संबंध उनके पिता के द्वारा होता है

3. तृतीय नातेदारी (Teritiary Kindship):- जैसे भाई के साला के साथ संबंध। सदानों में नातेदारी संबोधन तथा नातेदारी व्यावहार का प्रचलन है।

डॉ0 बी0पी0 केशरी ने अपनी पुस्तक झारखण्ड के सदान में लिखा है कि– ''पिता के बड़े भाई को बड़ा या बड़का बाप, के छोटे भाई को काका या पितिया, बड़े भाई को दादा, पिता के पिता को आजा, भाईयों के लड़कों को भतीजा, लड़की के लड़कों को नाती, कहते है। महिला वर्ग में इसी क्रम में बड़ी या बड़की सांय, काकी–पितियाइन, भउजी, आजी, भतीजी और नातिन कहा जाता है। छोटे भाई की पत्नी, बड़े भाई की पत्नी और छोटे भाई की पत्नी के लिए बड़ा भाई भैहसुर माना जाता है। भाहों भौहसुर एक दूसरे का अदल–लिहाज करते हुए आमने–सामने नहीं आते है। पति के छोटे भाई को देवर और बहन को ननद कहा जाता है। पिता की बहन फुआ और उसका पति फुफा कहलाता है। बहन के पति को भाटू कहा जाता है। भाईयों की पत्नियाँ आपन में गोतनी कहलाती है। बड़ी गोतनी को छोटी गोतनी दीदी संबोधित करती है''[16]

''मातृकूल में माँ के भाईयों को मामा, माँ की पिता को नाना, मामा के बड़े लड़कों को दादा और इसी क्रम में महिलाओं को मामी, नानी और भउजी कहा जाता है। माँ की बहने मौसी कहलाती है बहन के लड़का–लड़की, मामा–मामी के भगिना–भगिनी कहे जाते हैं''[17]

मोहल्ला और आस–पास का कोई भी सदान ऐसा नहीं होता जो एक दूसरे से किसी न किसी नाता से बंधा हुआ न हो। ''अतिरिक्त एक दूसरा आत्मीय संबंध भी है जो स्वेच्छा प्रतिज्ञा की तरह ग्रहण किया जाता है। ऐसे संबंधों में पिता, सहिया, प्रसाद, करम, डाइर, जितिया डाइर, फूल, जाबा फूल, गुलैची फूल, अम्बा पतई, इन्दरधनुष आदि विशेष उल्लेखनीय है। मित्रता का यह संबंध अन्ततः पूरे परिवार को एक सुत्र में बांध लेता है। सहिया की माँ को सहिया माँ, सहिया की बहन को सहिया बहन और इसी तरह से सहिया दादा, सहिया भउजी, सहिया काका आदि का सिलसिला चलता है''[18]

नातेदारी के नियामक व्यवहार :–

परिहार (Avoidance):- जब संबंधियों में परस्पर संबंध होने के बावजूद भी वे एक दूसरे से दूर रहने का प्रयास करते हैं। जैसे– पुत्र–वधु अपने ससुर को भाहों–भौंसुर को एवं समधीन अपने समधी को देखकर घुंघट कर लेती है।

मातुलेय/मातुल (Avunculare) :- मामी–भगिना : झारखण्ड के सदानों में भगिना और मामी में हंसी–मजाक नहीं चलता है। मामी भगिना के लिए मातृवत् पूज्य है दूसरी ओर मामा–मामी अपने भगिना–भगिनी को देवता तुल्य मानते हैं। **पितृश्वस्त्रीय** (Amitate) पिता की बहन यानि बुआ या फुआ की विशिष्ट भूमिका को पितृश्वत्रीय कहा जाता है।

परिहास संबंध (Joking Relationship)

1. **जीजा–साली परिहास :–** ''सदान में सभी जातियों में जीजा–साली का परिहास संबंध प्रचलित है'' आदिकालीन समाज में पत्नी की मृत्यु के बाद साली से विवाह किया जाता है। लेकिन अभी भी सदान में प्रचलित है।

2. **देवर–भाभी परिहास :–** सदान समाज में देवर–भाभी के बीच भी परिहास का प्रचलन है। ये दोनों में हंसी–मजाक चलता है।

3. **नाना–नानी से नातिन–नातीः–** सदान समाज में ''नाना–नानी एवं आजा–आजी से नातिन–नाती का हंसी–मजाक होता और एक अच्छा आनन्द करता है।

संस्कार (Sanskar) :-

झारखण्ड के सदान समाज में संस्कार/अनुष्ठान के नियमों का भी पालन किया जाता है। डॉ0 राजबली पाण्डेय के अनुसार ''धार्मिक विधि विधान अथवा वह कृत्य जो आन्तरिक तथा आध्यात्मिक सौन्दर्य का बाह्य तथा दृश्य प्रतीक माना जाता है''[19]

संस्कार के निम्नलिखित प्रकार है–

1.	छट्ठी संस्कार	2.	नामकरण संस्कार	3.	ईक्कीसी संस्कार
4.	मुँहजुठी संस्कार	5.	मुंडन संस्कार	6.	कनछेदी संस्कार
7.	जनेऊ संस्कार	8.	विवाह संस्कार	9.	खतना संस्कार
10.	दाह संस्कार (मृत्यु संस्कार)			11.	श्राद्ध संस्कार

सदानों में विवाह

विवाह संस्था का सामाजिक संरचना में एक विशिष्ट स्थान है। विवाह ही परिवार एवं नातेदारी का आधार है। झारखण्ड के सदान समाज के विभिन्न धर्मो में भिन्न–भिन्न प्रकार का विवाह होता है। हिन्दु धर्म के सदानों में इस्लाम धर्म के सदानों से भिन्न प्रकार का विवाह होता है। यहाँ हिन्दू धर्म के सदानों में निम्न लिखित प्रकार का विवाह होता है– (1) मड़वा विवाह (2) कोर्ट विवाह (3) गोलट विवाह (4) पूजा विवाह (5) प्रेम विवाह (गंधर्व विवाह) (6) हरण विवाह (7) सगई विवाह (8) फूल विवाह (फूल वियाही) (9) ढुकू विवाह (10) चढ़ बरात विवाह, (11) डोली हेरा विवाह, लड़की–लड़के के घर आ जाती है (12) मंदिर विवाह, (13) पंच विवाह और (14) बाल विवाह।

(1) **मड़वा विवाह :** जब सदानों ने घर में मड़वा गाड़कर अपने लड़की को विवाह करता है तो उसे मड़वा विवाह कहते है।

(2) **कोर्ट विवाह :** जब सदानों में लड़का–लड़की खुद दोनों मिलकर कोर्ट में आवेदन देते है और जिला निबंधक या जिला अवर निबंधक के सामने अपना विवाह को स्वीकार करते हैं।

(3) **गोलट विवाह :** जब एक सदान परिवार अपने लड़का लड़की को दूसरे परिवारों में एक ही घर में विवाह करता है तो उसे गोलट विवाह करते है।

(4) **पूजा विवाह :** जब धीवढरी करके पूजा पाठ करके विाह करते है तो उसे पूजा विवाह (धीवढरी विवाह) कहते है।

(5) **प्रेम विवाह (गंधर्व विवाह) :** सदान समाज में प्राचीन काल से ही गंधर्व विवाह का प्रचलन है। इसमें लड़का–लड़की एक दूसरे से प्रेम करने के बाद विवाह करते है।

(6) **हरण विवाह :** जब कोई लड़का लड़की को हरण करके ले भाग जाता है और उसको दबाव देकर विवाह कर लेता है तो उसे हरण विवाह कहते है।

(7) **द्वाबर विवाह :** जब लड़की या लड़का को दूसरी बार विवाह होता है तो उसे द्वाबर विवाह कहते हैं

(8) **फूल विवाह :** जब सदानों में बड़े भाई को मृत्यु हो जाती है तो कुँवारा देवर को भाभी के साथ शादी कर देता है तो उसे फूल विवाह कहते है।

(9) **ढुकू विवाह :** जब कोई लड़की किसी लड़का के घर में जबरदस्ती घुस कर उस लड़का से विवाह कर लेती है तो उसे ढुकू विवाह कहते है। इस प्रकार के कुछ सदानों में ही होता है।

(10) **चढ़ बरात विवाह :** जब लड़का वाला लड़की के घर बरात ले जाता है और लड़की के घर में ही विवाह होता है तो उसे चढ़ बरात विवाह कहते है।

(11) **डोली हेरा विवाह :** जब सदानों में कन्या की लड़का के या वर के घर लाकर विवाह करता है तो उसे डोली हेरा विवाह कहते हैं।

(12) **मंदिर विवाह :** जब लड़का–लड़की मंदिर के नियम से मंदिर में ही विवाह कर लेता है तो उसे मंदिर विवाह कहते है।

(13) **पंच विवाह :** जब ग्राम पंचों के सामने विवाह किया जाता है तो उसे पंच विवाह कहते है इसमें गाँव या महल्ला के पंच लोग गवाह होते है।

(14) **बाल विवाह :** सदानों में लड़की का विवाह रजोदर्शन के पूर्व एवं लड़का के किशोरावस्था में विवाह कर देता है।

मुस्लिम सदानों में विवाह :– मुसलमान सदानों में विवाह को निकाह कहते है। ''मुस्लिम विवाह एक धार्मिक संस्कार नहीं वरन एक दीवानी समझौता है जिसका उद्देश्य घर बसाना, संतानोत्पति करना एवं उन्हें वैध घोषित करना है''[20] ।

सदानों की आर्थिक स्थिति :–

किसी भी समाज की आर्थिक स्थिति आर्थिक संरचना पर निर्भर करता है। आर्थिक संरचना सभी समाज में किसी न किसी रूप में जरूर होती है। प्रत्येक समाज में आर्थिक संरचना अलग–अलग रूप में दिखाई देता है। प्रत्येक समाज को ही अपनी आर्थिक संरचना एक निश्चित सीमाओं के अन्दर ही बांधना होता है और इन्हीं सीमाओं के कारण ही प्रत्येक समाज की आर्थिक संरचना में कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य दिखाई देती है। इस प्रकार मनुष्य अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पार्यावरण का दोहन या संस्कृति से ही उसे इसके शोषण का साधन प्राप्त होते है। इस प्रकार पर्यावरण और संस्कृति की अन्तः क्रिया ही आर्थिक संरचना को जन्म देता है।

आर्थिक संरचना की विभिन्न ईकाइयाँ उत्पादन विनियम, उपभोग एवं सम्पत्ति सभी सामाजिक संरचनाओं से घनिष्ट रूप से संबंधित है। मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकता है– भोजन, वस्त्र और आवास। इनमें भोजनकी आवश्यकता सर्वप्रमुख है जिसकी पूर्ति के लिए व्यक्ति अपने भौगोलिक पर्यावरण से अनुकलन करता है एवं उसी के अनुरूप संस्कृतिक भौतिक तत्वों का निर्माण करता है। इस प्रकार आर्थिक संरचना संस्कृति तथा पर्यावरण के बीच अन्तः क्रिया का परिणाम है। सामाजिक उदविकासीय सिद्धान्त के समर्थकों के अनुसार मानव के आर्थिक जीवन का उदविकास चार स्तरों में निम्नलिखित है–

1. शिकार करने एवं भोजन एकत्रित करने का स्तर
2. पशुपालन का स्तर
3. कृषि स्तर
4. प्रौद्योगिक स्तर

सदानों का व्यवसाय :– सदान समाज में विभिन्न धार्मो के विभिन्न जातियां है। प्रत्येक जाति का अपना एक व्यवसाय होता है। अधिकांश लोग अपने परंपरागत व्यवसाय में लगे रहते हैं तथा सामान्य स्थिति में उसे प्रायः नहीं छोड़ते हैं। कुछ विद्वानों ने जाति प्रथा का निर्माण या उत्पति का आधार व्यवसाय माना जाता है।

झारखण्ड के मूलवासी सदानों का आर्थिक स्थिति सदानों का जीवन जंगल से जुड़ा रहा है क्योंकि प्राचीन काल से ही जंगल में सदानों का वास स्थली रहा था और जंगल से जीविकापार्जन होता था। आज भी सदानों का आर्थिक जीवन जंगल से जुड़ा हुआ है और सदानों की आर्थिक व्यवस्था का निम्न विशेषताएँ है– (1) सरल अर्थव्यवस्था (2) वन आधारित अर्थव्यवस्था (3) उत्पादन उपयोग एवं श्रम के पैटर्प की इकाई परिवार (4) साधारण तकनीक पर आधारित अर्थव्यवस्था (5) लाभरहित अर्थव्यवस्था, सम्प्रदाय सहकारी इकाई (7) उपहार एवं विशेष अवसरों पर विनियम (8) हाट बाजार (9) धांगर जैसे आर्थिक संस्था।

धांगर झारखण्ड की सदानों की अर्थव्यवस्था की एक विलक्षण विशेषता है। बड़े भूमिपतियों द्वारा नियोजित व्यक्ति को यहाँ के धांगर कहते है। धांगर मालिक का पूर्णकालिक कृषि श्रमिक होता है। लेकिन इसे मालिक अपने पारिवारिक सदस्य ही समझते है।

प्राचीन काल में झारखण्ड के मूलवासी सदानों का आर्थिक जीवन वनोत्पाद एवं शिकार पर आश्रित था। धीरे–धीरे सदानों का आर्थिक जीवन– यापन के साधन, स्त्रोत एवं तरीके में परिवर्तन होते गया। आग का आविष्कार हुआ तो कच्चा मांस को पक्का कर खाने लगा। कृषि से उत्पादक करने के तरीके मालूम हुआ और जानवर को पालने लगा और पालतू जानवर से कृषि कार्य में हल चलाने के लिए बैल, भैंस, गाय का उपयोग करने लगा और धीर–धीरे कृषि में उत्पादन करके आर्थिक जीवन को संगठित किया चूँकि ''राज्य में कृषि सामान्यतः परम्परागत ढंग से की जाती है। अतः यहाँ की कृषि व्यवसायिक न होकर जीवन निर्वाह प्रकृति की है।''[21]

झारखण्ड के सदानों की आर्थिक स्थिति आदिवासियों की तरह ही अति शोचनीय है, खाने की पर्याप्त भोजन, पहनने की प्रर्याप्त वस्त्र तथा रहने को ठीक मकान उपलब्ध नहीं है लेकिन झारखण्ड के प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक समाज अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए सदैव प्रत्यशील रहता है। आर्थिक संगठन के माध्यम से व्यक्ति अपनी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मूल्यों उद्देश्यों और आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए एक क्रमबद्ध संगठित प्रणाली विकसित करता है जिसे

आर्थिक संगठन का नाम दिया जा सकता है। अर्थव्यवस्था के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। मानव के जीविकोपार्जन और सम्पति प्राप्ति से संबंधित जितनी भी क्रियाएँ हैं वह आर्थिक संगठन के अन्तर्गत आती हे। आर्थिक क्रिया को मानव जीवन के अन्य पक्षों से पृथक करके नहीं देखा जा सकता है। उत्पादन, विनियम उपभोग एवं सम्पति सभी साामजिक संगठन से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। यही कारण है कि सामाजिक व्यवस्था की भिन्नता के साथ अर्थव्यवस्था में भी भिन्नता देखने को मिलती है। मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक संगठन की उत्पति हुई है। इस प्रकार अर्थ व्यवस्था सांस्कृति एवं पर्यावरण की अंतः क्रिया का परिणाम है।

सदानों की अर्थव्यवस्था आधुनिक अर्थव्यवस्था से भिन्न है उनके अधिकांश आर्थिक प्रयत्न भोजन प्राप्ति हेतु उत्पादन के लिए किये जाते हैं, जो मुख्य रूप से भौगोलिक प्रर्यावरण पर निर्भर करता है। इसके लिए उन्हें कठिन परिश्रम एवं प्रकृति से संघर्ष करना पड़ता है। सदान समाज में अधिकांशतः पारिवारिक एवं सामुहिक आधार पर ही उत्पादन के लिए प्रयत्न करते है लेकिन वर्तमान समय में वैज्ञानिक प्रगति की वजह से सदानों ने भौगोलिक पर्यावरण की सीमाओं को लांघा है और यहाँ से सदान एक ही पर्यावरण में अनेक अर्थव्यवस्थाओं एवं व्यवसायों को एक साथ पनप रहा है। इसके बावजूद भी सदानों की अर्थव्यवस्था प्रकृतिक से आज भी घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। यही करण है कि सदानी अर्थव्यवस्था आज भी आधुनिक समाज की अर्थव्यवस्था से भिन्न है।

सदान समाज में आर्थिक क्रियाएँ मुख्य रूप से जीवन निर्वाह के लिए की जाती है सदानों की प्रमुख समस्या उदरपूर्ति तथा जीवन–यापन की होती है, इसलिए उन्हें प्रकृति से संघर्षरत रहना पड़ता है। सदान समाज में उत्पादन एवं उपभोग करने वाले अलग–अलग समुह नहीं होते है। इस समाज में परविार ही उत्पादन एवं उपभोग करने वाली इकाई होती है।

आधुनिक अर्थव्यवस्था की भांति सदान समाज में नियोजित अर्थव्यवस्था नहीं होती है, अनुकून जलवायु पर्याप्त वनस्पति एवं प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता होने के बावजूद भी वैज्ञानिक संयंत्र एवं तकनीकर ज्ञान के अभाव के कारण उत्पादन काफी निम्न स्तर का होता है। हल, खुरपी, कुदाल, कुल्हाड़ी, तीर–धनुष इत्यादि से ही प्रायः उत्पादन कार्य करते है। जिससे भरण–पोषण की न्यूनतम आवश्यकताएँ भी बहुत मुश्किल से पूरी होती है। नित्य प्रतिदिन या पूरे मौसम भर खाद्य संचय में संलग्न रहना, भूखे की स्थिति का बना रहना तथा अधिकांश समय कठिनाईयों का सामना करना सदानी अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता है। सदान समाज के लोगों में भविष्य के लिए संग्रह करने की प्रवृति नहीं होती है। यदि कुछ लोग धन संग्रह भी करते है तो उसे लम्बे अर्से तक सुरक्षित रखना नहीं जानते हैं। वे लोग उत्पादन में भावी जरूतों पर बहुत कम ध्यान देते है। प्रायः साधनों के अभाव के कारण वे अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति सीमित मात्रा में कर पाते है। थोड़े से आर्थिक साधनों पर अधिक बल दिए जाने के कारण उनका आर्थिक विकास ठीक से नहीं हो पाता है।

हाट बाजार :– झारखण्ड के सदानों के लिए हाट बाजारों का विशिष्ट महत्व है। हाट–बाजार इनकी आर्थिक जीवन के केन्द्र बिन्दु है। जिसमें लोगों को औपचारिक ढंग से बांधने की क्षमता होती है। हाट–बाजार गप–शप, खेल–तमाशा, समाचार एवं त्योहार के भी स्थल होती है। हाट के दिन प्रायः सभी सदान अपने उत्पादित सामग्रियों को बिक्री तथा आवश्यक चीजों की खरीद्दारी हेतु हाट चले जाते है। आज भी इन हाट बाजारों में मापने की परम्परागत पैमाने जैसे पैला, भागा आदि का ही प्रयोग किया जाता है। इन हाटों में आज भी अंशतः वस्तु विनियम (एक्सजेंज ऑफ गुड्स) का प्रचलन देखने को मिलता है। हाट बाजारों में मिल उत्पादित सामग्रियां नगर के व्यापारियों द्वारा आज कल बेचे जाते है।

अध्ययन का उद्देश्य :– झारखण्ड के सदानों का सामाजिक–आर्थिक स्थिति का जानना एवं पता लगाना मुख्य उद्देश्य है।

अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत शोध आलेख रांची नगर के वार्ड नं0– 54 में सोलांकी, हेसाग, विकास नगर, वास्को नगर, प्रेम नगर, लटमा बस्ती, हटिया बस्ती का भाग, न्यू लटमा, पटेलनगर में सदानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति की अध्ययन तथा विश्लेषण से जुड़ा हुआ है।

तथ्य संकलन में यंत्र तथा तकनीकी का प्रयोग :– प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूचि का प्रयोग किया गया है। साक्षात्कार के अन्तर्गत संरचित साक्षात्कार तथा असहभागी अवलोकन का प्रयोग किया जाता है।

अध्ययन पद्धति :– प्रस्तुत शोध में निर्देशन पद्धति का प्रयोग किया गया है। निदर्शन पद्धति के उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग किया गया है। निदर्श के रूप में 50 सदान उतरदाताओं का चयन किया गया है।

तथ्य विश्लेषण :– प्रस्तुत अध्ययन में 50 उतरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूचि के माध्यम से रांची नगर की 54 वार्ड से साक्षात्कार किया गया। उतरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं की आधार पर तथ्यों को विश्लेषित एवं सारणीकरण किया गया है।

सारणी संख्या– 1

सदानों में दहेज प्रथा का प्रचलन के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण

क्या दहेज प्रथा का प्रचलन है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हाँ	03	02	06	04	10
नहीं	22	23	44	46	90
कुल योग	**25**	**25**	**50**	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उतरदाताओं में 22 महिलाएँ एवं 23 पुरूषों ने सदानों में दहेज–प्रथा का प्रचलन नहीं बताये है। जिसका प्रतिशत क्रमशः 44 प्रतिशत महिलाएँ एवं 46 प्रतिशत पुरूष की संख्या है। लेकिन 03 महिलाएँ एवं 02 पुरूषों ने दहेत प्रथा शुरू हो रही है। इसलिए हम कह सकते है कि दहेज प्रथा का प्रचलन में परिवर्तन हो रहा है।

सारणी संख्या– 02

सदानों में वधू–मूल्य का प्रचलन के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण

क्या वधू–मूल्य का प्रचलन है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हाँ	20	22	40	44	84
नहीं	05	03	10	06	16
कुल योग	**25**	**25**	**50**	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि यहाँ 50 उत्तरदाताओं में 20 महिलाएँ एवं 22 पुरूषों ने सदानों में वधू–मूल्य प्रचलन का समर्थन किया है जिसका प्रतिशत क्रमशः 40 प्रतिशत महिलाएँ एवं 44 प्रतिशत पुरूष है। वधू–मूल्य का प्रचलन का समर्थन नहीं किया है जिसका प्रतिशत क्रमशः 10 प्रतिशत महिलाएँ एवं 06 प्रतिशत पुरूषों की संख्या है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश सदानों में वधू–मूल्य का प्रचलन है लेकिन कुछ सदानों में नहीं है। और धीर–धीरे वधू–मूल्य के प्रचलन में परिवर्तन हो रही है।

सारणी संख्या– 3

मुख्य भोजन के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण

मुख्य भोजन	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
शाकाहारी	11	08	22	16	38
मांसाहारी	14	17	28	34	62
कुल योग	**25**	**25**	**50**	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उतरदाताओं में से 11 महिलाएँ एवं 08 पुरूषों ने अपना उतर में कहा है कि शाकाहरी भोजन करते है। जिसका प्रतिशत क्रमशः 22 महिलाएँ एवं 16 प्रतिशत पुरूषों की संख्या है। 14 महिलाएँ एवं 17 पुरूषों ने अपना उतर में कहा है कि हमलोग मांसाहारी भोजन करते है।

अतः निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि अधिकांश सदानों मांसाहारी है और कुछ शाकाहारी है।

सारणी संख्या – 4

कृषि कार्य के आधार पर तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण

कृषि कार्य के किस ढंग से पक्षधर हैं?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
परम्परागत	20	21	40	42	82
आधुनिक	05	04	10	08	18
कुल योग	**25**	**25**	**50**	**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 साक्षात्कार उतरदाताओं में से 20 महिलाएँ एवं 21 पुरूषों ने कृषि कार्य करने के ढंग परम्परागत बताई है। जिसका प्रतिशत महिलाएँ एवं 42 प्रतिशत पुरूषों की है और 05 महिलाएँ एवं 04 पुरूषों ने अपना साक्षात्कार उतर ने आधुनिक ढंग से कृषि कार्य करने के पक्षधर है। जिसका प्रतिशत क्रमशः 10 प्रतिशत महिलाएँ 08 प्रतिशत पुरूषों का है।

अतः स्पष्ट रूप से कह सकते है कि सरकार सदानों के आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नशील नहीं है।

सारणी संख्या– 5

झारखण्ड राज्य बनने से सदानों को रोजगार के मिलने के आधार पर तथ्यों का संकलन

क्या सदानों को रोजगार मिला हैं?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हाँ	01	02	02	04	06
नहीं	24	23	48	46	94
कुल योग	**25**	**25**	**50**	**50**	**100**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 साक्षात्कार उतरदाताओं में से मात्र 01 महिला एवं 02 पुरूष ने ही उतर दिया है कि झारखण्ड राज्य बनने से सदानों के रोजगार मिला है। जिसका प्रतिशत क्रमशः 02 प्रतिशत महिलाएँ एवं 04 प्रतिशत पुरूष का है और 24 महिलाएँ 23 पुरूषों ने अपना उत्तर में कहा है कि सदानों के रोजगार नहीं मिला है। जिसका प्रतिशत क्रमशः 48 प्रतिशत महिला एवं 46 प्रतिशत पुरूषों का है। अतः स्पष्ट रूप से कह सकते है कि झारखण्ड राज्य बनने से अभी तक 94 प्रतिशत सदानों को कोई रोजगार नहीं मिला है। ये लोग पुराना व्यापार करते है। केवल कुल 86 प्रतिशत सदानों ने हाँ में उत्तर दिया है।

सारणी संख्या– 6

सरकारी योजनाओं से सदानों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति पर प्रभाव के आधर पर तथ्यों का संकलन

क्या सरकारी योजनाओं से सदानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा है?	संख्या		प्रतिशत		कुल प्रतिशत
	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	
हाँ	03	04	06	08	14
नहीं	22	21	44	42	86
कुल योग	**25**	**25**	**50**	**50**	**100**

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 50 उतरदाताओं में से 03 महिलाएँ एवं 04 पुरूषों ने अपने साक्षात्कार उत्तर में कहा है कि सरकारी योजनाओं से सदानों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ा है जिसका प्रतिशत क्रमशः 06 प्रतिशत महिला 08 प्रतिशत पुरूषों का है यानि कुल 14 प्रतिशत सदानों ने उतर हाँ में दिया है और 22 महिलाएँ एवं 21 पुरूषों ने अपने साक्षात्कार उतर में कहा है कि योजनाओं से सदानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति पर प्रभाव नहीं पड़ा है। जिसका प्रतिशत क्रमशः 44 प्रतिशत महिलाएँ एवं 42 प्रतिशत पुरूषों का है यानि कुल 86 प्रतिशत सदानों ने नहीं में उतर दिया है।

निष्कर्ष

सदानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सदान समाज विभिन्न जातियों में बटा हुआ है। उनके रहन–सहन, नातेदारी के रीतियों विवाह के स्वरूप, दहेज प्रथा एवं बधु–मूल्य की तरीके में परिवर्तन जुआ है। सदानों का आर्थिक जीवन जंगल से जुड़ा हुआ था। धीरे–धीरे सदानों का आर्थिक जीवन के साधन– स्रोत, कृषि से उत्पादन करने के तरीके, व्यावसाय करने की ढंग में बदलाव आया है। अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि सदानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में अनुकूलनशील परिवर्तन हुआ है।

संदर्भ

1. केशरी, वी0पी0 (1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृति संघ (प्रकाशन) रांची पृष्ठ– 74–75
2. वही, पृष्ठ– 77
3. तिवारी, राम कुमार (2003) झारखण्ड की रूप–रेखा शिवंगन पब्लिकेशन, रांची– पृष्ठ– 533
4. केशरी, वी0पी0 (1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन) रांची पृष्ठ– 78
5. तिवारी, राम कुमार (2003) झारखण्ड की रूप–रेखा शिवंगन पब्लिकेशन, रांची– पृष्ठ– 533
6. वही, पृष्ठ– 533
7. केशरी, वी0पी0 (1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन) रांची पृष्ठ– 78–79
8. वही, पृष्ठ– 90
9. तिवारी, राम कुमार (2003) झारखण्ड की रूप–रेखा शिवंगन पब्लिकेशन, रांची– पृष्ठ– 533
10. केशरी, वी0पी0 (1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन) रांची पृष्ठ– 94
11. वही, पृष्ठ– 95
12. तिवारी, राम कुमार (2003) झारखण्ड की रूप–रेखा शिवंगन पब्लिकेशन, रांची– पृष्ठ– 533
13. केशरी, वी0पी0 (2008) झारखण्ड के इतिहास की कुछ जरूरी बातें, प्रकाशक नागपुरी संस्थान पिठोरिया, रांची, पृष्ठ– 27
14. वही, पृष्ठ– 27
15. केशरी, वी0पी0 (1992) झारखण्ड के सदान, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ (प्रकाशन) रांची पृष्ठ– 80
16. वही, पृष्ठ– 80
17. वही, पृष्ठ– 81
18. वही, पृष्ठ– 80
19. पाण्डेय, राजबली, हिन्दु संस्कार, पृष्ठ– 18
20. गुप्ता, एम0एल0 एवं शर्मा, डी0 डी0 (1991) भारतीय समाज एवं सामाजिक संस्थाएँ साहित्य भवन आगरा, पृष्ठ– 171
21. उपाध्याय, बैद्यनाथ (2008) झारखण्ड अपडेट, स्पर्धा प्रकाशन, जमशेदपुर, पृष्ठ– 83